ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

गाँधी के राजनैतिक विचारों पर पश्चिमी विचारों का प्रभाव

वन्दना शर्मा

(शोधार्थी),इतिहास विभाग, सेज यूनिवर्सिटी, भोपाल, म.प्र.

प्रोफेसर- वीना कुर्रे

शोध निर्देशिका, आर्टस एण्ड ह्यूमैनिटीज़, सेज यूनिवर्सिटी भोपाल, म.प्र.

सह शोध निर्देशक डॉ. दृष्टिपाल परिहार इतिहास विभाग स्कोप ग्लोबल स्किल यूनिवर्सिटी

गाँधी जी के राजनैतिक विचारों में जहाँ भारतीय सभ्यता एवं विचारों की छवि उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है तो वही पश्चिमी सभ्यता एवं उनके विचारों ने गाँधी के अंतर्मन को प्रभावित किया था।

गाँधी और सुकरात के विषय में एडवर्ड थमसन ने कहा है कि ''मेरा यह विश्वास है कि सुकरात के बाद गाँधीजी के समान आत्मसंश्यी और सम्पूर्ण सन्तुलन वाला व्यक्ति विश्व मे नही देखा।'' संसार का पहला सत्याग्रही जेल भेजा गया और उसे मौत की सजा दे दी गई। जब वह मौत से पहले जेल में था तो उसके शिष्य क्रीटो ने जेल से भागने के लिए कहा और उसने भागने की सारी व्यवस्था कर दी। तब सुकरात ने अपने शिष्य क्रीटो से कहा कि कानून का पालन करो, जब केवल भौतिक हितों का प्रश्न हो..... उसका उल्लंघन करो, और दुखी होकर उल्लंघन करो।

गाँधी के मानस पटल पर सुकरात का अंहिसा एवं सत्याग्रह इतना प्रभावशाली हुआ कि उन्होंने उस पर प्लेटो के द्वारा लिखी गयी किताब ''द अपोलोजी एण्ड द क्रीटों (The Apology and the Crito)का पुनर्लेखन किया और उसका नामद स्टोरी ऑफ सत्याग्रह(The story of Sutyagarh)रखा। ''

सत्य प्रेम, शांति के महान उपासक ईसामसीह थे। जिसके लिए उन्होने संघर्ष करते हुए दुख और कष्ट सहते हुए फांसी पर झूल गये थे।

गाँधी ने ईसा मसीह को ''सत्याग्रहियों का राजकुमार की संज्ञा दी और कहा कि '' यदि सरमान आन दि माउन्ट (Sermon on the mount)को ईसाई धर्म की एक मात्र पवित्र किताब मान ली जाये तो

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

वे स्वयं अपने को ईसाई करने को तत्पर है। गाँधीजी ने मानवता की सेवा के लिए जीवन को मोक्ष माना है। ईसामसीह की तरह उनका मत भी था कि'' मानवता की सेवा के द्वारा इसी धरती पर स्वर्ग प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए वह हमेशा प्रयत्न करते रहे। ईसामसीह और गाँधीजी दोनेा का मत था कि यदि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मौत भी सामने आये तब भी पीछे नही हटना चाहिए। एस. केत्र जार्ज का कथन है कि ''आत्मा से प्रेरित होकर आमरण अनशन, जैसाकि गाँधी ने कहा है, एक उत्कृष्ट वस्तु है, और सत्याग्रह का मुकुट है। ईसा मसीह के सिद्धान्तों पर चलकर प्रेम को जीता जा सकता है। और सभी प्रकार की बुराइयों को समाप्त किया जा सकता हैं।

गाँधी जी हृदयस्थल को जिस किताब ने सबसे अधिक प्रभावित किया था वह जान रस्किन की पुस्तक ''अन्टू द लास्ट थी। इस पुस्तक ने गाँधी की अंर्तरात्मा को छुआ था। और गांधी जी ने इस पुस्तक का ''सर्वोदय'' नाम से गुजराती भाषा में अनुवाद किया था। इस पुस्तक से उन्होने तीन सिद्धान्त के रूप को प्रतिपादित किया।

पहला सिद्धान्त था कि सभी व्यक्तियों के हितों में अपना हित निहित हो। दूसरा सिद्धान्त था कि वकील और नाई, अर्थात् उच्चकोटि के मानसिक या बौद्धिकश्रम तथा कथित नि मनकोटि के शारीरिक श्रम, दोनों के कार्य को मूल्य अथवा महत्व समान ही होना चाहिए। क्योंकि सभी को व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करने का समान अधिकार है। तथा तीसरा सिद्धान्त कृषक और श्रमिक का परिश्रमपूर्ण सादा जीवन ही की वास्तव में सच्चा जीवन है।''गाँधीजी ने रॅस्किन के नैतिक विचारों को अपने जीवन में महत्व देने लगे थे। रॅस्किन और गाँधीके विचार भौतिकता से दूर नैतिकता और आध्यात्मिकता को महत्व देते थे। दोनो ही महान व्यक्तित्व के धनी थे राजनीति के लिए धर्म और नैतिकता परम आवश्यक मानते और मानव शारीरिक श्रम को महतव देते थे।

इन दोनो महापुरूषो में वैचारिक समानता थी। गाँधीजी रस्किन् के विचारो से प्रभावित थे। गांधी और टालस्टाय दोनों ने यह बताया कि प्रेम के द्वारा ही जीवन की हम समस्त समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। अहिंसा का सिद्धांत प्रेम है दोनो के अनुसार सभी बुराई एवं कष्ट प्रेम से दूर हो सकते हैं। अध्यात्मिक प्रवृत्ति दोनों ही लोगों के हृदय का द्वार थी। ये दोनों ही पूंजीवादी के विरूद्ध रहे। गाँधी टालस्टाय के मत को स्वीकार करते हुए कहते है कि''यदि घृणा करनी ही हो तो पाप से करनी चाहिए न कि तथाकथित पापी से।'' टालस्टाय का कहना था कि हिंसक युद्ध में भी सत्याग्रहियों का शिक्षणऔर

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

प्रशिक्षण होना चाहिए गाँधी इस बात के समर्थन में थे। इसलिए उन्होंने दक्षिण अफ्रिका के फिनिक्स तथा टालस्टाय तथा साबरमती तथा वर्धा में सत्यागह आश्रम की स्थापना की। और वहाँ सत्याग्रहियों को शिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित किया।

गाँधीजी ने स्वयं पहले सभी बातों को स्वयं पर लागू किया। उन्होने सत्य अंहिसा, बह्मचर्य सत्याग्रह का मार्ग अपनाकर विश्व को एक नई राजनीति से परिचय कराया।

गाँधी ने स्वयं की इन्द्रियों को पंतजलि के यम सूत्र से ज्ञानावन्ति किया और उसे अपने दैनिक जीवन का अंग बनाया। ''मेरा मानना है कि मानव मन या मानव समाज सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक नाम के अलग-अलग और स्वतंत्र चौखटों में बंटा हुआ नहीं है। ये सभी एक दूसरे के साथ किया-प्रतिक्रिया करते है।

यंग इंडिया में गाँधीजी ने लिखा था कि अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ से ही मैने जो कुछ कहा है, और किया है उसके पीछे एक धार्मिक उद्देश्य रहा है।

गाँधी जी के अनुसार ''किसी देश की राजनीति चेतना उस देश के लोकतन्त्र का परिचायक होती हैं जिस देश का लोकतन्त्र जितना मजबूत होगा उस देश के लोग उतना ही स्वालम्बी होगें।

गाँधी जी कहते थे कि ''मैं राजनीति को अपने जीवन की गहनतम बातों से पृथक नही कर सकता जिसका सीधासाधा कारण यह है कि मेरी राजनीति भ्रष्ट नही है, और वह अंहिसा और सत्य के साथ अटूट बंधन में बंधी है।[10]गाँधीजी के धार्मिक विचारो ने उनकी राजनीति को एक नयी विचारधारा दी। उन्होने धर्म को राजनीति से जोड़कर रखा। गाँधी जी ने कहा कि'' धर्म से मेरा आशय औपचारिक धर्म या प्रथागत धर्म से नही है, बल्कि उस धर्म से जो सभी धर्मों का मूल है, और जो हमारी सृष्टि से हमारा परिचय कराता है।''गाँधी जी के राजनैतिक विचारों की विशेषता थी कि वे परम्परागत न होते हुए प्रयोगात्मक थी। गाँधीजी का व्यक्तित्व उनको भारत में ही नही वरन् विश्व में एक विशेष स्थान रखता है।

गाँधी जी के अनुसार लोकतन्त्र महत्वपूर्ण है। उनका लोकतंत्र में अटूट विश्वास रहा है। और वह लोकतंत्र को रामराज मानते थे। गाँधी जी ने कहा कि लोकतन्त्र में जीवन का कोई पक्ष राजनीति से अछूता नही है। गाँधीजी के लिए धर्म और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू थे। धर्म और नैतिकता को त्याग कर आप किसी भी राजनीति में लोकतन्त्र की स्थापना नही कर सकते है।

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

गाँधीजी ने कहा कि ''मेरा यह कथन निहसंदेह एक अर्थ में सही है कि मैं अपने धर्म को अपने देश से ज्यादा प्यार करता हूँ इसलिए मैं हिन्दू पहले हूँ और राष्ट्रभक्त बाद में।'' और मेरा धर्म कारागार का नही हैं। इसमें ईश्वर के दीन से दीन प्राणियों के लिए स्थान है। लेकिन यह उद्धतता, और जाति धर्म तथा रंग के गर्व को सहन नही करता।

गाँधी इसलिए चाहते थे कि एक आर्दश राज्य और आर्दश देश के लिए जनतंत्रीय व्यवस्था में अधिक से अधिक लोगो की हिस्सेदारी होनी चाहिए और इस बात पर भी बल देते थे कि जो लोग व्यवस्था में चुने हुए हो उनकी योग्यता, गुण नैतिकता क्या है और कितनी है।

गाँधीजी की विचार धारा उनको एक राजनीतिज्ञ के रूप में स्थापित करती है। गाँधीजी का जीवन एवं उनका प्रभावशाली चरित्र विश्व के लिए एक अनुकरणीय विषय रहा है।

गाँधी जी ने नवजीवन में लिखते हुए कहा है कि सत्य बोलना और सत्य के अनुसार आचरण करना मेरे स्वभाव में शामिल है। अपने जीवन में हमेशा सच्चे होने का यह विश्वास ही गाँधी की आन्तरिक शक्ति का प्रेरणा स्रोत था।

जब वह उपवास में थे तो उन्होने कहा था कि मैं एक घृणित व्यक्ति हो सकता हूँ, पर जब सत्य मेरे माध्यम से बोलता है तो मैं एक अजेय व्यक्ति हो जाता हूँ।

गाँधी जी ने सत्य की जो मिशाल विश्व के मंच पर स्थापित की वह सभी भारतवासी बल्कि हम यह कहे कि पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय था।'

यदि आप धर्म को स्वीकार करते है तो सर्वप्रथम आप को सत्य से सम्बन्ध स्थापित करना होगा। सच्चा पुरूषार्थी एवं धर्माधिकारी वही होता है जो सत्य के मार्ग पर चलता है। सत्य में वह ताकत है वह शक्ति है जिससे लोग भयभीत होते है। और सत्य ही वह मार्ग है जिससे आप ईश्वर की प्राप्ति करते है। ईश्वर की प्राप्ति का अर्थ गाँधी के अनुसार यह था कि सभी इस धरा पर एक समान है और सभी का एक धर्म है उसकी नैतिकता। गाँधीजी ने कहा है कि'' मेरे लिए नैतिक में अध्यात्मिक समाविष्ट है-सुधारक के रूप में, मैने हर चीज को नैतिक दृष्टि से देखा है। चाहे मैं किसी राजनीति समस्या से जूझ रहा हूँ। अथवा सामाजिक या आर्थिक समस्या से उसका नैतिक पक्ष प्रबल होकर सामने आ जाता और मेरे संपूर्ण दृष्टिकोण पर छा जाता है।''

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

गांधी जी ने केवल ईश्वर को सत्य माना है और निरन्तर उसकी प्राप्ति के लिए उन्होने अपने सबसे प्रिय वस्तु का त्याग करने के लिए भी तैयार रहे है।

गाँधीजी ने कहा कि ''मैने अपने जीवन में ऐसी बाते कहने की गलती कभी नही की है, जिनका मेरा अभिप्राय न हो- मेरा स्वभाव बात की तह तक सीधे पुहँचने का है, और यदि मैं कुछ समय के लिए तह तक न पहुँच पाऊ तो भी मैं जानता हूँ कि सत्य अंतत लोगों को अपनी वाणी सुनाने और महसूस कराने में सफल हो जायेगा। मेरे अनुभव में प्रायः ऐसी ही घटित हुआ है।'' यदि आप ने ऐश्वर्य भावना और सरल हृदय से सत्य की खोज की है तो गाँधी के अनुसार'' सत्य की खोज में क्रोध, स्वार्थ, घृणा आदि विकार स्वभावतः छूटते जाते है अन्यथा सत्य की प्राप्ति असंभव ही हो जाए। जो व्यक्ति वासनाओं के वश में है उसकी नीयत साफ होने पर भी वह कभी सत्य की प्राप्ति नहीं कर सकेगा। सत्य की खोज में सफलता प्राप्त होने पर मनुष्य प्रेम और घृणा, सुख, आदि से पूर्णत मुक्त हो जाता है।''[18]सत्य की अवधारणा को प्रत्यक्ष रूप से वही व्यक्ति पा सकता है जो प्रत्येक व्यक्ति को उतना ही प्रेम करें जितना वह अपने आप को करता है। अगर व्यक्ति ने यह इस सत्य को पा लिया तो वह संसार में किसी भी वस्तु का त्याग करने हेतु हो जायेगा।'' सत्य प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करता है, और मनुष्य को उसे वही खोजना चाहिए। सत्य जिसे जैसा दिखाई दे, वह उसी से निर्देशित हो। लेकिन किसी को यह अधिकार नही है कि वह सत्य का जिस रूप में दर्शन करता है उसके अनुसार चलने के लिए दूसरे लोगों पर जोर जबरदस्ती करें।''

मैं इसमें विश्वास नही करता कि एक आदमी का अध्यात्मिक लाभ हो जाए और उसके आस पास के लोग दुख भोगें । मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ मुझे मानव का ही नही बल्कि प्राणिमात्र की अनिवार्य एकता में विश्वास है। इसलिए मेरा विश्वास है कि अगर एक आदमी को अध्यात्मिक लाभ मिलता है तो उसके साथ सारी दुनिया का लाभ होता है, और अगर एक आदमी का पतन होता है तो उस सीमा तक सारी दुनिया का पतन होता है।'' सर्वोदय एक ऐसे सभा की संरचना करता है जिसें वर्ण, वर्ग, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर न तो किसी का तिरष्कार हो न बहिष्कार हो और न ही संहार हो।

सर्वोदय का अर्थ है सभी का उदय। विनोबा भावे जी के अनुसार सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। सर्वोदय का व्यवहारिक पक्ष विनोबा भावे के भूदान से है। अर्थात सभी के पास सभी चीजें किसी के पास जरूरत से ज्यादा नही और जरूरत से कम नही वह सर्वोदय कहलाता है। हक्सेल ने कहा है कि ''जीओ और जीने दो'। अंहिसा को अपनाकर शोषण को खत्म कर, दूसरो को अपना

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

बनाकर प्रेम का विस्तार करना होगा। गाँधीजी का सर्वोदय जान रस्किन की किताब अन टू दि लास्ट का गुजराती अनुवाद है।

''मैं यह नही मानता कि आध्यात्मिक नियम के प्रर्वतन का अपना कोई विशिष्ट दोष है। इसके विपरीत, वह जीवन के दैनंदिन कार्यकलाप के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार, यह आर्थिक, सामाजिक और राजनीति सभी क्षेत्रो का प्रभावित करता है।''

गाँधी के मतानुसार मन वचन, कर्म और शरीर से किसी को भी कष्ट देना या नुकसान पहुँचाना अंहिसा की श्रेणी में आता है। अंहिसा का शब्दिक अर्थ हिंसा न करना। और इसकी उत्पत्ति पतंजलि के योगसूत्र अष्टांगयोग के पहले अध्याय यम से हुयी है। सत्य और अंहिसा का अनुसरण महावीर और गौतमबुद्ध ने भी किया है गाँधीजी अंहिसावादी पर्थ प्रदर्शक थे और उसी मार्ग पर स्वयं भी अग्रहित थे। मैं केवल एक मार्ग जानता हूँ-अंहिसा का मार्ग। हिंसा का मार्ग मेरी प्रकृति के विरूद्ध है। मैं हिंसा का पाठ पढ़ाने वाली शक्ति को बढ़ाना नही चाहता.... मेरी आस्था मुझे स्वत करती है कि ईश्वर बेसहारों का सहारा है, और वह संकट में सहायता तभी करता है जब व्यक्ति स्वयं को उसकी दया पर छोड़ देता है।[22]गाँधी जी ने कहा है कि ''मेरे जीवन का मार्गदर्शक निष्क्रियता नही अपितु अधिकतम सक्रियता है।''[23]अहिंसा केवल सत्य बोलना ही नही है वरन् अंहिसा व्यक्ति के व्यवहार का वह रूप है जिसमें मन की वृत्ति है। जिसमें किसी भी प्राणी वस्तु के लिए द्वेष की भावना न हो वह अंहिसा की प्रवृत्ति कहलाती है। सत्य और अंहिसा दोनो एक ही सिक्के के दो रूप है। केवल जीव की हत्या न करना अंहिसा नहीं है। वरन् गांधी के अनुसार'' मैं ऐसी स्थिति लाना चाहता हूँ, जिसमें सबका सामाजिक दर्जा सामान माना जाए। मजदूरी करने वाले वर्गो को सैकड़ो वर्षो से सभ्य समाज से अलग रखा गया है, और उन्हें नीचा दर्जा दिया गया है। उन्हे शूद्र कहा गया है और इस शब्द का यह अर्थ किया गया है कि वे दूसरें वर्गो के नीचे हैं। मैं बुनकर किसान और शिक्षक के लड़को में कोई भेद नही होने दे सकता।''अंहिसा के बिना सत्य का ज्ञान मुमकिन नही है वैसे ही ब्रह्मचर्य के साथ सत्य तथा अंहिसा दोनो का ज्ञान आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म अथवा ईश्वर के मार्ग पर चलना। अर्थात् मन को एकाग्र कर इंन्द्रियो को वश में कर के परमेश्वर के रास्ते पर चलना। गाँधीजी के अनुसार ''ब्रह्मचर्य जीवन जीने का तरीका है। जो मनुष्य को बह्मा की तरफ ले जाता है।'' यदि आप के मन में विकार है और आप के मन की वृत्ति विकारयुक्त है तो आप ब्रह्मचर्य की प्राप्ति नही कर सकते। ब्रह्मचर्य का अर्थ यह नही कि वीर्यरक्षा करें अथवा काम जय मात्र नहीं। बल्कि ब्रह्मचर्य का सही मतलब आपकी सभी इन्द्रियों पर आप का संयम बना रहें। ''ब्रह्मचर्य का पूरी तरह पालन करने वाले स्त्री-पुरूष मनोवेगों से पूर्णतया मुक्त होते है। ऐस व्यक्ति ईश्वर के सानिध्य में निवास करते है,

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

वे ईश तुल्य होते है। मुझे इसमें कोई संदेह नही है कि ऐसे ब्रह्मचर्य का मनसा, वाचा कर्मणा पूरी तरह पालन करना संभव है।'' गाँधीजी के लिए ब्रह्मचर्य का विचार वचन और कर्म पर नियत्रंण सब जगह और हर समय समस्त इन्द्रियों पर नियंत्रण।'' गाँधीजी के अनुसार यदि आप ने अपने मन को नियत्रित नही किया है तो आप कभी भी वाणी और कर्म पर नियत्रंण स्थापित नही कर पायेगे। भारत में एक कहावत प्रचलित है कि '' जिसका हृदय शुद्ध है उसके घर गंगा का पवित्र जल निवास करता है।'' जिसका मन एकाग्र है और नियंत्रित है उसके लिए सब कुछ दुनिया को वस्तु का एक खेल है। यदि आप का मन स्वस्थ है और आप के नियत्रंण में है तो आप को कभी सिरदर्द मानसिक एवं शारिरिक कष्ट का अनुभव नही होगा।

गाँधीजी अस्तेय के अर्थ को समझाते हुए कहते है कि यदि केवल दूसरो का सामान देना ही नही है। बल्कि यदि कोई वस्तु हमारे उपयोग की नही है किन्तु फिर भी हम उसको अपने पास रखे है और उसकी उपयोगिता दूसरों को कही अधिक है तो यह एक प्रकार की चोरी हैं दूसरो की चीज को देखना एवं अपना मन बिगाड़ना यह भी एक प्रकार की चोरी होती है। दूसरो विचारों को अथवा खोज को यह शोध को अपना बना कर प्रस्तुत करना यह विचारो की चोरी हैं अस्तेय और अपिरग्रह में बहुत थोड़ा अन्तर है। हमें किसी वस्तु की आवश्यकता नही है किन्तु हम उसे भविष्य के लिए संभाल के रख लेगें तो यह परिग्रह है। ईश्वर पे विश्वास है तो हमें जब जिस चीज की आवश्यकता होगी तो वह हमें उस समय अवश्य देगा।

इसका अर्थ यह नही कह सकते कि मेहनत करने वाला व्यक्ति ईश्वर के भरोसे बैठ जाए और वह कर्म न करें। परिश्रमी व्यक्ति मेहनत करता है और आलसी व्यक्ति अपने श्रम को बचाता है। वह परिग्रह शक्ति पर भरोसा करता है। किन्तु जो व्यक्ति श्रम करता है पूरी ईमानदारी से वह अपरिग्रही रहता है।''

गाँधी जी कहते है कि ''उस आंनद के कारण की खोज करते हुए मैने पाया कि अगर मैं कोई चीज अपनी मानकर अपने पास रखता हूँ, तो सारी दुनिया से उसकी रक्षा करनी पड़ती है। मैने यह भी पाया कि दुनिया में ऐसे बहुत से लोग है, जिनके पास वह चीज नही है, हालांकि वे उसे चाहते है, और भूखे तथा अकालग्रस्त लोगों को मैं अकेले में कही मिल जाऊँ तो वो न केवल मेरी चीज को मेरे साथ बाँट लेना चाहेगें बल्कि उसे मुझसे छीन लेना चाहेंगें और तब उसकी रक्षा के लिए मुझे पुलिस से संरक्षण मांगना

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

होगा। तब मैने स्वयं से कहा कि वे लोग अगर उस वस्तु को चाहते है। और मुझसे छीन लेने पर उतारू है तो इसलिए नही कि अनके मन में मेरे प्रति कोई द्वेष है बल्कि इसलिए कि उनकी जरूरत मेरी जरूरत से बड़ी है।[28]

निष्कर्ष

महात्मा गाँधी के विचार एक निश्चित विचार प्रणाली बन कर उमरी। गाँधी जी के विचार को अगर एकबद्ध किया जाये तो वह गाँधीवादी जीवन मार्ग बन जायेगा। जीवन मार्ग के रूप में गाँधी विचारों में वह सम्पूर्ण बाते एवं विशेषताएं निर्हित है जो वाद के लिए आवश्यक है। गाँधीजी के कुछ विचारों में उनके सिद्धान्त राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय समस्याओं के समाधन के लिए एक विशेष स्थान प्राप्त करते है। जिन विभिन्न आन्दोलनो और संगठनो के इस गाँधी को जन्म दिया और कुशलतापूर्वक संचालन किया।

गाँधीजी एक सशक्त व्यक्ति थे उनके व्यक्तित्व में उनके विचारो का समावेश था। वह व्यक्ति कर्म के आधार पर और यम के नियम को अपने व्यक्तित्व में चरितार्थ कर एक युग या यू कहे कि भारत को आजादी दिलाने के लिए एक नये नियमों की शुरूआत की।

उन्होंने दक्षिण अफ्रिका के साथ भारत में भी कई आन्दोलन किए। उन्ही आन्दोलनो की सतह और वजह पर हम अपनी आजादी को देख पाए।

''कांग्रेस का इतिहास राष्ट्रीय आन्दोलनों का इतिहास है।'' कांग्रेस के बासठ वर्ष परिश्रम और कठिन संघर्ष के बाद स्वतन्त्रता की प्राप्ति हुयी। गाँधी जी के भारत आने से पहले भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन दो विचार धाराओं के साथ आगे बढ़ रहा था।

एक विचारधारा थी उदारवादी जो न्याय पर विश्वास रखा हुआ था तो दूसरा उग्रवादी जो यह सोचते थे कि स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष की ओर बढ़ना पड़ेगा।

''उदारवादी शांतिपूर्ण ढंग से अंग्रजो की न्यायप्रियता में विश्वास रखते हुए प्रार्थना पत्रों द्वारा स्वतन्त्रता चाहते थे, जबकि दूसरी विचारधारा वाले मानते थे कि स्वतन्त्रता उपहार में नही मिलेगी इसके लिए लंबे संघर्ष की आवश्यकता है। उन्होने माना कि भारत का इंग्लैण्ड के हितों से कोई मेल नही है, वे एक दूसरे के विपरीत है।'' इंग्लैण्ड में उच्च शिक्षा अध्ययनरत नेहरू ने लिखा कि ''सन् 1857 के बाद भारत पहली बार दब्बू बनकर शासन को स्वीकार करने की बजाए, उससे लड़ रहा हैं तिलक की गतिविधियों और

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

उनकी आस्था ने, अरविन्द घोष और जिस प्रकार बंगाल की जनता बायकाट की शपथ ले रही थी। उसके समाचारों ने इंग्लैण्ड में रहने वाले हम सब को उत्साहित किया था।''

गाँधी जी के आगमन से पहले भारतमाता की धरा में राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना जाग्रत हो चुकी थी, और आजाद भारत का स्वपन लोगों की आँखों में देखा जा चुका था बस इसे एक दिशा देना या निश्चित रूपरेखा तैयार करना बस रह गया था। गाँधीजी ने वह रूपरेखा बना कर लोगों को एक नई दिशा दी। राष्ट्रीय आन्दोलन के घर-घर तक और सबकी आत्मा में उन्ही की भाषा में आजादी के महत्व को समझाकर लोगों तक पहुँचाया। और सही अर्थ में स्वतन्त्रता के महत्व व अर्थ को समझाया।

संदर्भ सूची

जे.बी. कृपलानी, महात्मागाँधीजीवनऔरचिन्तन, पृ.-16

वही, पृ.-43

प्रभातमोचार्य, वही, पृ.-54

पूनमगर्ग, वही, पृ.-95

प्रतिमाश्रीवास्तव, वही, पृ.-66

वेदप्रकाशवर्मा, महात्मागाँधीकानैतिकदर्शन, पृ.-32

पूनमगर्ग, वही, पृ.-100

यंग, 2-3-1922, पृ.-131

गाँधी, एम.के. सत्याग्रहःगाँधीस्मारकनिधि, 1967. पृ.-28

यंग, 1-10-1931, पृ.-28

एम.के, पृ.-7

हरिजन, 6-10-1946, पृ.-341

1-06-1921, पृ.-171

यंग, 1-10-1931, पृ.-28वही, पृ.-379

इण्डियनओपिनियन, नेटाल (साउथअफ्रिका) 1903-1904, पृ.-52

16- हरिजन, 29-3-1935, पृ.-51

यंग, 20-8-1925, पृ.-285-286

वही, पृ.-254-255

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 05, 2022

हरिजन, 24-11-1933, पृ.-6

यंग, 4-12-1924, पृ.-398

यंग, 3-9-1925, पृ.-342

यंगइंडिया, 11-10-1928, पृ.-201

हरिजन, 15-1- पृ.-1938

हरिजन, 15-1-1938

अग्रवाल, मन्नारायण, स्वतन्त्रभारतकेलिएगाँधीवादीशासनविधान, नवयुगसाहित्य26.मन्दिर, 1946, पृ.-87

यंगइंडिया, 5-6-1924, पृ.-186

वही, पृ.-110

स्पीरा (स्पीचेजएंडराइटिग्सआफमहात्मागाँधीःजी.ए.नटेसनएंडकं., मद्रास, 1933 चतुर्थसंस्करण) पृ.-166-67

देसाई, ए.आर, सोशलबैकग्राउंडआॅफइंडियननेशनलिज्म, पृ.-330, बाम्बे, सन्1966